क्रासिन्सकी चौक में बिल्लियाँ

लेखन: कैरन हैस, चित्र: वैण्डी वॉटसन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

क्रासिन्सकी चौक में बिल्लियाँ

लेखन: कैरन हैस

चित्र: वैण्डी वॉटसन

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बिल्लियाँ दीवार की दरारों से,
अंधेरे कोनों से
और कचरे की ढ़ेरियों से निकली आती हैं।

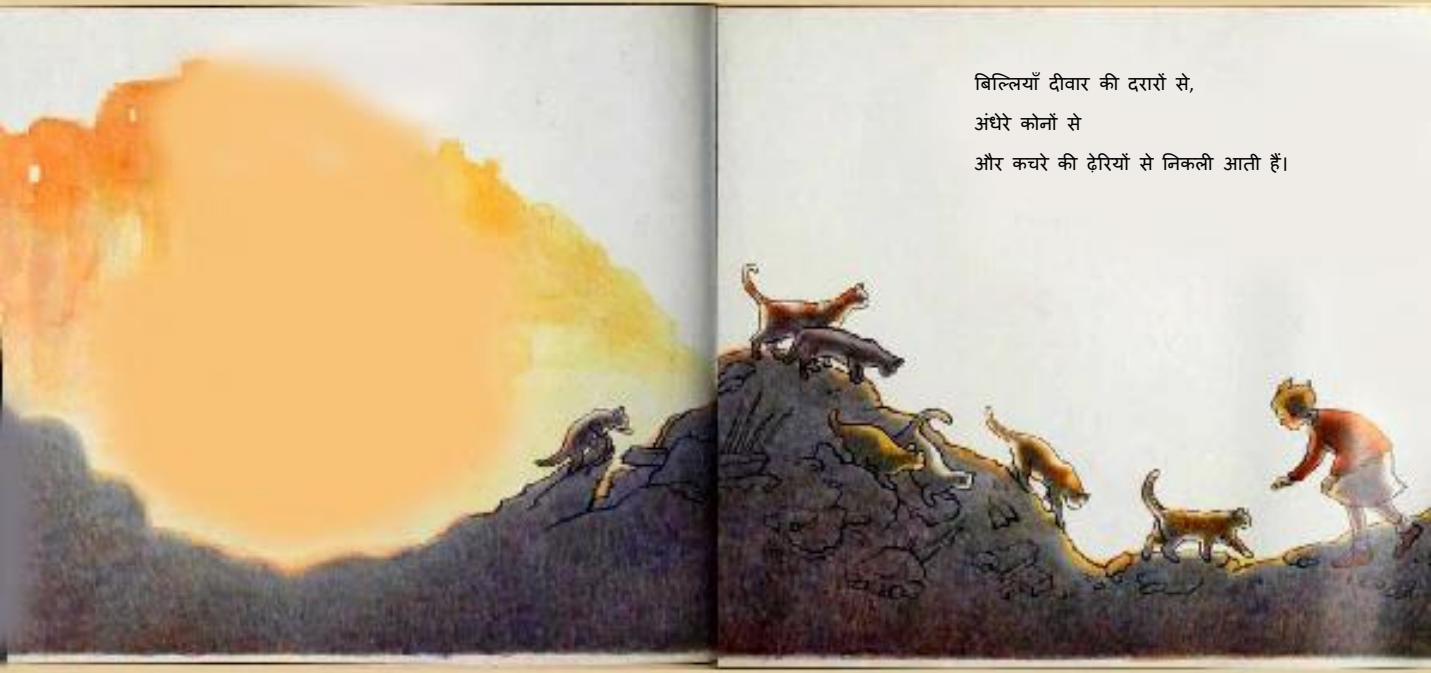

वे जानती हैं मैं उन्हें सिर्फ

अपना कोमल स्पर्श, स्नेह में डूबी आवाज़ भर

दे सकती हूँ,

पर मेरे पास आने के सिवा कोई चारा नहीं है उनके पास।

कभी वे भी किसीकी थीं।

वे सोफा के कुशनों पर सोती थीं,

स्फटिक की तश्तरियों से खाती थीं।

वे हौले से गुर्राती थीं,

छातियों को अपने नाखूनों से खरोंचती थीं,

उन्हें प्यार करने वालों की गरदनों से लिपटती थीं।

पर अब उनकी मखमली सिरों को चूमने वाला कोई नहीं है।

मैं फुसफुसा कर कहती हूँ, "तुम्हें खिलाने को कुछ भी नहीं है मेरे पास।"

पर बिल्लियों को इसकी परवाह नहीं है।

अपनी थोड़ी सी डबलरोटी, पनियल सूप और अपना आलू में रख सकती हूँ,

जो उससे कहीं ज़्यादह है जो मेरे दोस्त माइकल को घेट्टो (नात्सियों द्वारा यहूदियों के लिए बनाई गई बस्ती) की दीवार के पीछे मिल पाता है।

उन्हें ज़रूरत नहीं है कि मैं उन्हें कुछ खिलाऊं,

खाने को उनके पास ढ़ेर सारे चूहे जो हैं।

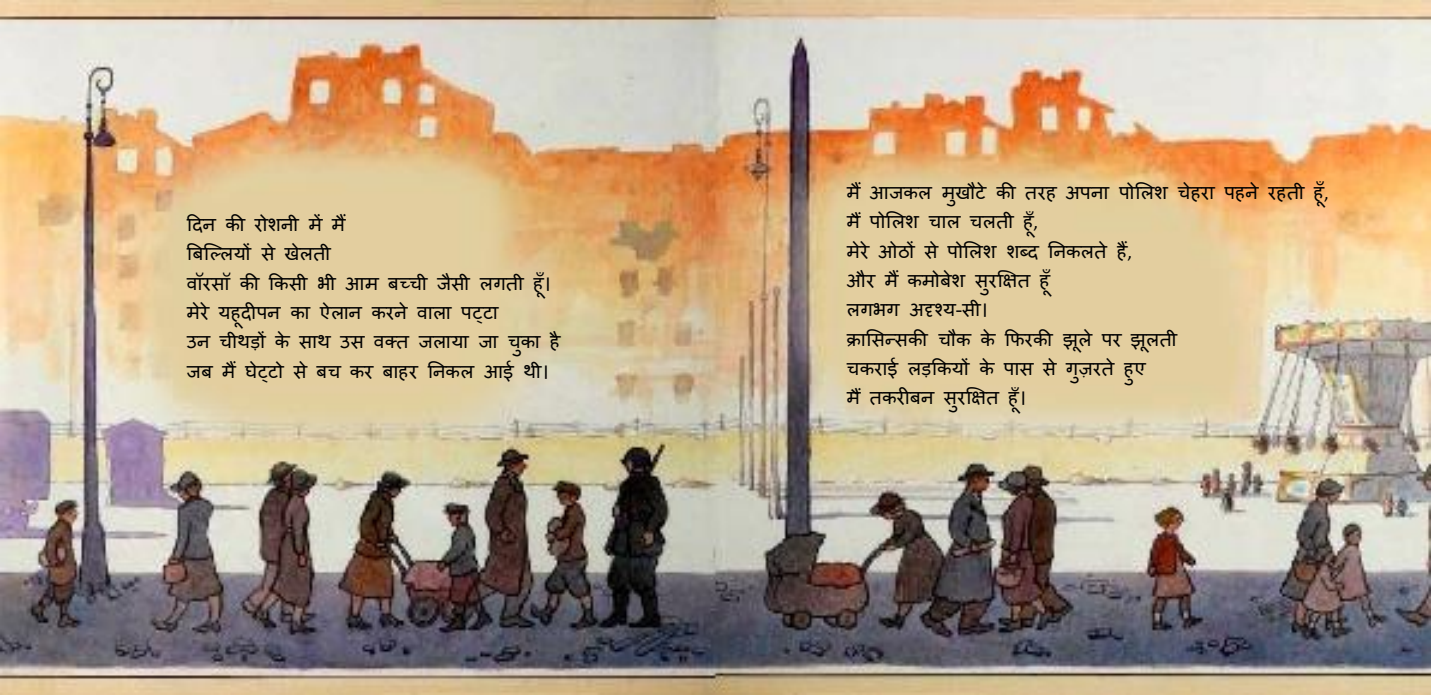

दिन की रोशनी में मैं
बिल्लियों से खेलती
वॉरसॉ की किसी भी आम बच्ची जैसी लगती हूँ।
मेरे यहूदीपन का ऐलान करने वाला पट्टा
उन चीथड़ों के साथ उस वक्त जलाया जा चुका है
जब मैं घेट्टो से बच कर बाहर निकल आई थी।

मैं आजकल मुखौटे की तरह अपना पोलिश चेहरा पहने रहती हूँ,
मैं पोलिश चाल चलती हूँ,
मेरे ओठों से पोलिश शब्द निकलते हैं,
और मैं कमोबेश सुरक्षित हूँ
लगभग अदृश्य-सी।
क्रासिन्सकी चौक के फिरकी झूले पर झूलती
चकराई लड़कियों के पास से गुज़रते हुए
मैं तकरीबन सुरक्षित हूँ।

मेरी बहादुर बहन
मीरा,
परिवार में बस वही तो बची है।
मेरी बहादुर बहन
एक योजना बनाती है।
यह उसकी सबसे ताज़ी योजना है,
घेट्टो में तस्करी से खाना पहुँचाने की योजना।
उसके दोस्त रेलगाड़ी से आएंगे,
उनके पास झोले होंगे,
जिनमें
कपड़े या किताबें नहीं
बल्की डबलरोटी, ओट्स (जई) और चीनी भरी होगी।

मैं बखूबी जानती हूँ कि घेट्टो की दीवारों की दरारें
ठीक कहाँ हैं
बिल्लियों ने उनका सुराग मुझे बता दिया है।
मीरा के दोस्त आरिक के बनाए नक्शे पर मैं उनकी
जगहें बताती हूँ।
"हरेक दरार में खाने का सामान भर दिया जाएगा," मीरा
कहती है
वह चूल्हे पर हमारा पतला-पनियल सूप उबाल रही है।
मैं उसे क्रासिन्सकी चौक की वह जगह बता कहती हूँ कि
डबलरोटी उस जगह से गुपचुप अन्दर पहुँचाई जा सकती है,
वह जगह जिसकी दीवार की दूसरी ओर माइकल रहता है।
मीरा खतरे को बखूबी जानती है,
पर वह हाँ में सिर हिलाती है।
मैं बिस्तर पर पसर जाती हूँ
और उस बड़े-से कमरे में रोशनी नाचने लगती है।

पर उस तयशुदा दिन

जिस वक्त रेलगाड़ी वॉरसॉ की ओर गुड़क रही होती है,

आरिक हमारे कमरे में अचानक घुसता है,

उसकी साँसें फूल रही हैं। वह कहता है कि गैस्टापो (नात्सी पुलिस) को

रेलगाड़ी और झोलों की बात पता चल चुकी है।

वे अपने कुत्तों के साथ स्टेशन पर मौजूद होंगे,

ताकि कुत्ते सूंघ कर तस्करों को ढूंढ़ निकालें।

आरिक और मीरा आँखों ही आँखों में जो कहते हैं

वह मुझे देर रात दरवाज़े पर दी गई दस्तक से भी ज़्यादा डरा देता है।

हम बिल्लियों को बटोरते हैं

एक-एक कर

मीरा और आरिक, हैनरिक और मारेक, हाना और आना, लोसेलो और स्टासिन,

हम बिल्लियों को टोकरियों में इकट्ठा करते हैं।

हम स्टेशन की ओर बढ़ते हैं

वहाँ हम इधर-उधर फैल जाते हैं,

रेलगाड़ी के आने का इन्तज़ार करते हुए।

गैस्टापो और उनके गुर्राते कुत्तों के पीछे।

अचानक भाप और सीटी की चीख के साथ रेलगाड़ी
स्टेशन पर आ रुकती है।
सवारियाँ उतरती हैं।
कुलों को छोड़ दिया जाता है
वे उन औरतों ओर आदमियों की ओर,
लड़कियों और लड़कों की ओर झपटते हैं
जिनसे डबलरोटी, जई और चीनी की महक उठ रही है।
पर इसके पहले कि कुले उन तक पहुँचें

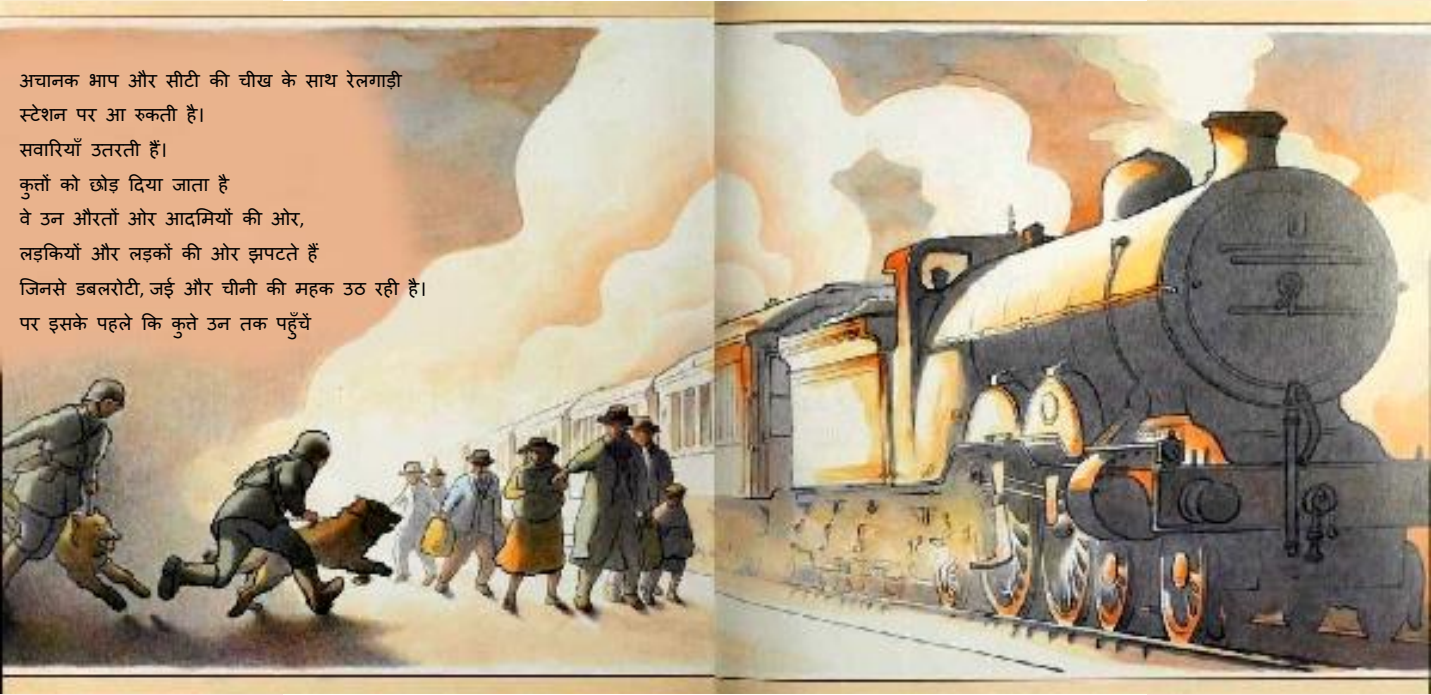

हम अपनी
टोकरियाँ खोल
बिल्लियों को
छोड़ देते हैं।
स्टेशन पर तहलका मच जाता है
बौखलाए कुत्ते अपनी भूख को
बिल्लियों की ओर मोड़ देते हैं।
बिल्लियाँ हर दिशा में दौड़ती हैं,
वे दरारों के बीच से सिकुड़ कर
बच निकलती हैं,
अंधेरे कोनों में गुम हो जाती हैं,
खुली जगहों के बीच से भाग
जाती हैं।

तस्करी से लाया गया सामान
स्टेशन से तुरत-फुरत गायब हो जाता है
हमारी तरफ के वॉरसॉ से गायब हो जाता है।
दीवार से, दीवार के ऊपर से, दीवार के नीचे से
सब कुछ घेट्टो में पहुँच जाता है।

पहुँचाए गए सामान में मेरी टोकरी भी है
जिसमें एक पूरी डबलरोटी है
माइकल के लिए
शुक्रगुज़ार हाथ उसे थामते हैं।

फिरकी झूले का संगीत

हवा में तैरता है और क्रासिन्सकी चौक पर

एक रुपहली आभा की तरह ऊपर उठ जाता है।

लेखिका की कलम से

2001 में मैंने एक छोटा-सा लेख पढ़ा जिसमें द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान की उस घटना का बयान था कि वॉरसॉ के रेल स्टेशन पर किस तरह बिल्लियों ने गैस्टापो को बुरी तरह छकाया था। यह कहानी मेरे दिलो-दिमाग में गहरे तक बस गई। इसने मुझे मजबूर कर दिया कि मैं पोलैण्ड जा कर वॉरसॉ के घेट्टो और वहाँ के यहूदियों द्वारा नात्सियों के विरोध के बारे में तहकीकात करूँ। वहाँ मुझे जो दो महत्वपूर्ण स्त्रोत मिले वे थे - *रिंगलब्लूम आर्काइव्स* और अडीना ब्लेडी श्वाइगर की किताब *आई रिमेम्बर नथिंग मोर*। *क्रासिन्सकी चॉक में बिल्लियाँ* शीर्षक से लिखी गई इस किताब की काल्पनिक बड़ी बहन मीरा के किरदार की प्रेरणा मुझे अडीना ब्लेडी श्वाइगर से मिली। इस कथा की बनावट और उसका कथ्य यहूदियों द्वारा नात्सियों के विरोध के ब्लेडी के निजी अनुभवों पर आधारित है।

ऐतिहासिक तथ्य

सितम्बर 1939 में, यानी द्वितीय विश्व युद्ध के शुरुआत में पोलैण्ड की राजधानी वॉरसॉ पर जर्मनी ने हमला किया और उस पर काबिज़ हो गया। गैस्टापो (जर्मन पुलिस) ने यहूदी स्त्री-पुरुषों और बच्चों को वॉरसॉ और उसके आस-पास के इलाकों से खदेड़ा और उन्हें शहर के एक तयशुदा इलाके, घेट्टो, में रहने पर मजबूर कर दिया। उस इलाके में बसे गैर-यहूदियों को आदेश दिया गया कि वे अपने घर खाली कर दें। तब घेट्टो के चारों ओर ईंट की दीवारें खड़ी कर दी गईं ताकि यहूदी ओर गैर-यहूदी एक-दूसरे से अलग-थलग रहें। जब तक सारे के सारे यहूदियों को इकट्ठा कर वॉरसॉ के इस घेट्टो में पहुँचाया गया, वहाँ की आबादी इतनी हो चुकी थी घेट्टो रोगों और भूख से त्रस्त हो गया। हर दिन सैकड़ों औरतें, आदमी और बच्चे घेट्टो की सड़कों पर बेहोश हो गिर जाते। इसलिए क्योंकि वे एक भी कदम और नहीं चल सकते थे। और वहीं उनकी मौत हो जाती।

जुलाई 1942 में जर्मनी ने वॉरसॉ के यहूदियों को दूसरे स्थानों पर पहुँचाना शुरू किया। सबसे छोटे और सबसे बुज़ुर्ग घेट्टो से गायब होने लगे। पहले हर दिन 2000 लोग, तब 10,000 उसके बाद 20,000 लोग। जो सबसे कमज़ोर थे उन्हें वॉरसॉ छोड़ने से पहले ही मार डाला गया। आखिरकार घेट्टो को पूरी तरह खाली कर दिया गया, सिवा उन लोगों के जो हथियारों के कारखानों में काम करते थे।

हालाँकि वे शरीर और मन से थक चुके थे, कई यहूदियों ने नात्सियों का विरोध किया। हज़ारों बहादुर युवक, युवतियों ने नात्सियों की योजनाओं को असफल करने की कोशिशें कीं। उन्होंने विरोध समूह बनाए। जब भी संभव होता वे नात्सियों के लिए परेशानी खड़ी करते। निजी खतरों के बावजूद वे लोगों को घेट्टो से बाहर निकालते और हथियार, खाने का सामान और दवाएं अन्दर पहुँचाते। इस तरह उन्होंने हज़ारों यहूदियों को बचा लिया।

अगस्त 1943 में जब वॉरसॉ घेट्टो के जाँबाज़ योद्धाओं से आखिरी झड़प शुरू हुई, जर्मन सेना हर तरह से बेहतर स्थिति में थी। इसके बावजूद मुट्ठी भर बीमार, भूख से अधमरे और घायल घेट्टो वासियों ने जर्मन सेना का सामना चालीस दिनों तक किया। जर्मन सेना ने बमबारी की, घेट्टो की इमारतों को आग लगा दी। पर उनका विरोध कर रहे यहूदियों ने यह जानते हुए भी कि जर्मनों को हरा पाना असंभव है, अपने हमले तहखानों, अटारियों और खुफिया गलियारों से जारी रखे। वे मरते दम तक जर्मनों से लड़ते रहे।

बेशक हरेक यहूदी नहीं मरा। जो यहूदी पोलिश होने का बहाना कर घेट्टो की दीवार के उस पार 'आरियान' बस्ती में रहने लगे थे, उन्होंने सैकड़ों यहूदियों की घेट्टो से निकालने में मदद की। गेंरदन तक गंद और बेदबू से भरी वॉरसॉ की नालियों को पार कर उन्हें आज़ाद किया। युद्ध खत्म होने के बाद घेट्टो से बच निकले ये आखिरी लोग सामने आए। उन्होंने नात्सियों की बर्बरता का सच उजागर किया।

क्रासिन्सकी चौक की बिल्लियाँ भी
कभी किसी की हुआ करती थीं...

और वह लड़की भी, जिसके परिवार को युद्ध ने खत्म कर दिया था। युद्ध की उथल-पुथल के बीच वह लड़की और उसकी बड़ी बहन किसी तरह बचे रहने का संघर्ष कर रहे थे। इसके बावजूद उन्होंने अपनी जान खतरे में डाल उन लोगों की मदद की जो वॉरसॉ के बदनाम घेट्टो की दीवारों के अन्दर फंसे हुए थे।